रॉची विश्वविद्यालय की पीएचडी (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध प्रस्ताव की रूपरेखा

सत्र : 2023_ 24

शोध विषय : 'हिंदी यात्रा वृत्तांतों में भारतीय संस्कृति :एक अध्ययन'

(सन 1980 से 2000 तक)

शोध निर्देशिका

डॉ.सुनीता कुमारी

सहायक प्राध्यापक

विश्वविद्यालय,हिंदी विभाग,रॉची

विश्वविद्यालय, रॉची

शोधार्थी

शुभश्री दास

शोध विषय : ’ हिंदी यात्रा वृत्तांतों में भारतीय संस्कृति : एक अध्ययन ’

(सन 1980 से 2000 तक)

विषय चयन का आधार :

हिंदी साहित्य में गद्य साहित्य को दो भागों में बांटा गया है।प्रथम कथात्मक गद्य विधा और दूसरा कथेत्तर गद्य विधा। काथात्मक गद्य विधाओं में नाटक,उपन्यास, कहानी, निबंध,आलोचना आदि आते हैं और कथेत्तर गद्य विधाओं में रिपोर्ताज, रेखाचित्र,यात्रावृतांत,संस्मरण, डायरी साहित्य आदि रचना शामिल है। अक्सर यह देखा जाता है कि हिंदी साहित्य के परंपरागत गद्य विधा जैसे नाटक,उपन्यास,कहानी,निबंध आदि पर अब तक अनेक शोध कार्य हुए हैं और वर्तमान में भी हो रहा है।परंतु हिंदी कथेत्तर गद्य विधा जैसे यात्रावृतांत,संस्मरण,डायरी साहित्य,रिपोर्ताज आदि पर शोध कार्य की संख्या कम ही पाई जाती है।हालांकि यात्रा साहित्य आधुनिक साहित्यिक विधाओं में से एक सशक्त तथा महत्वपूर्ण विद्या के रूप में जाना जाता है।

यात्रा वृतांतकार अपनी यात्रा साहित्य के द्वारा देश-विदेश के दृश्यों,रीति रिवाजों,धर्म,सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश आदि से गहरा परिचय करवाता है।जिससे मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान की परिधि भी व्यापक होती है। यात्रा वृतांत ज्यादा यथार्थ परक रचना होते हैं। क्योंकि इसमें रचनाकार स्वयं की यात्रा को तथा आंखों देखा सच को ही अपने सूक्ष्म अनुभूति तथा भावनाओं के धरातल पर सृजनात्मक कला के माध्यम से सृजन करता है।यात्रा वृतांत दूसरे बिधायों की तरह घर में बैठे-बैठे कल्पना शक्ति के आधार पर सृजित नहीं किया जा सकता।इसमें कल्पनिकता न की बराबर है।यही विशेषता ही यात्रा साहित्य को कहानी,उपन्यास,नाटक आदि विधाओं से अलग बनाती है।इसलिए हमने अपने शोध कार्य के लिए हिंदी यात्रा साहित्य को चयन किया है।

प्रत्येक देश का पहचान खुद की संस्कृति से जुड़ा हुआ होता है।अपनी विशिष्ट संस्कृति के कारण ही कोई भी देश दूसरे देश से भिन्न होता है।संस्कृति किसी भी देश,जाति और समुदाय की आत्मा होती है।भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है।भारतीय संस्कृति अत्यंत उदांत्त,समन्वादी,सशक्त एवं जीवंत रही है।जिसमें जीवन के प्रति वैज्ञानिक,उदार दृष्टिकोण तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का अद्भुत समन्वय पाया जाता है।इसलिए भारतीय संस्कृति को विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है।

भारतीय संस्कृति का नूतन आयाम ब्रिटिश साम्राज्य की नींव के साथ प्रारंभ हुआ।आज हमारे देश में सांस्कृतिक स्तर पर हो रहे परिवर्तन के पीछे पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति का गहरा प्रभाव पाया जाता है।पाश्चात्य संस्कृति तथा परंपरा को आज भारतीयों में तेजी से अपनाया जा रहा है। जो कहीं ना कहीं भारतीयों के लिए गर्व का विषय नहीं है।अतः हमने 'हिंदी यात्रा वृतांतों में भारतीय संस्कृति : एक अध्ययन'(सन 1980 से 2000 तक) नामक शोध के माध्यम से भारत के विशाल,महान तथा समन्वय संस्कृति को उजागर करने का प्रयास किया है।जिससे युवा पाठक वर्ग भारतीय संस्कृति को अच्छे से जान पाएंगे और प्रभावित होंगे।

शोध की उपयोगिता/महत्व :

मनुष्य का जीवन एक यात्रा है।जन्म से लेकर मृत्यु तक के जीवन में वह कई पड़ाव से गुजरता है।अतः मनुष्य जीवन का यात्री है।यात्रा ज्ञान,शिक्षा तथा मनोरंजन का प्रमुख साधन है।ज्ञान तथा मनोरंजन का यह साधन सदियों से मनुष्य के साथ चलता आ रहा है और आगे भी चलेगा।यात्रा के दौरान प्राप्त अनुभवों को जब

साहित्यिक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है तब वह यात्रा साहित्य कहलाता है।अतः यात्रा साहित्य का स्वरूप अत्यंत व्यापक एवं समृद्ध है।

- इस शोध कार्य से पाठक वर्ग यात्रा साहित्य तथा उसके विकास क्रम को व्यवस्थित रूप से जान पाएंगे।
- इस शोध कार्य में हिंदी साहित्य के गद्य विधा यात्रा वृतांत का अध्ययन विश्लेषण से हिंदी साहित्य में नवीन तथ्यों को जोड़ा जा सकता है।जिससे साहित्य की परिधि और भी व्यापक बनेगा
- साहित्य,समाज और संस्कृति एक दूसरे का पूरक है।इनके बिना सृजन कार्य संभव नहीं है।यह शोध कार्य से भारतीय संस्कृति और परंपरा के ऊपर नए तथ्य उपलब्ध हो सकेंगे।
- इस शोध में सन 1980 से 2000 तक की चयनित यात्रा वृतांतों में भारतीय संस्कृति की विश्लेषण है।उससे हमारे आधुनिक युवा वर्ग जो कहीं ना कहीं भारतीय संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति को अपना ने में व्यस्त हैं, पाश्चात्य विचार से प्रभावित हो रहे हैं इस शोध कार्य के माध्यम से स्वयं के देश तथा उसकी संस्कृति को और गहराई से जान सकेंगे।
- विदेश में रहने वाले बहुत से भारतीय पाठक वर्ग तथा विदेशीयों जो भारत तथा उसकी संस्कृति को जानने में इच्छुक है,उनके लिए भी यह शोध कार्य उपयोगी सिद्ध होगा।
- हिंदी यात्रा वृतांत के क्षेत्र में तथा भारतीय संस्कृति के ऊपर शोध करने वाले भाभी शोधकर्ताओं के लिए मेरा यह शोध कार्य मार्गदर्शक सिद्ध होगा।
- भारतीय विशाल संस्कृति से संदर्भित यात्रा वृतांतों को क्रमबद्ध रूप से अध्ययन कर निष्कर्ष तक पहुंचना एक चुनौती पूर्ण कार्य माना जा सकता है।अतः मेरा यह शोध कार्य संपूर्ण प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण है।

शोध की परिसीमा :

किसी भी शोध विषय का एक सीमा निर्धारण आबश्यक होता है।हिंदी यात्रा वृतांत एक विधा के रूप में भारतेंदु युग से अपनी यात्रा शुरू कर समकालीन लेखन तक आपहुंचा है।हमने इस शोध कार्य में सन 1980 से लेकर 2000 तक की समय सीमा के अंदर संदर्भित यात्रा वृतांतों को ही अपने शोध कार्य में उल्लेख किया है।यात्रा वृत्तांत के चयन के पश्चात उनके प्रकाशन वर्ष को आधार बनाकर समयसीमा का निर्धारण किया गया है।

शोध कार्य का उद्देश्य :

कोई भी देश अपनी विशिष्ट संस्कृति के आधार पर दूसरे देशों से भिन्न तथा स्वतंत्र होता है।पूरे विश्व में भारत की अन्यतम पहचान उसकी उदार संस्कृति है।विविधता में एकता,'वसुधैव कुटुंबकम','अतिथि देवो भव' आदि भारतीय मान्यताएं ही भारत को पूरे विश्व में भिन्न तथा श्रेष्ठ बनाती है।

- इस शोध का उद्देश्य हिंदी यात्रा वृतांतों के माध्यम से भारतीय महान संस्कृति तथा उसकी विचारधारा को प्रस्तुत करना है।
- यात्रा वृतांत पर जो भी शोध कार्य किए गए हैं वह ज्यादातर किसी निर्दिष्ट रचनाकार के यात्रा वृतांत पर आधारित है।कुछ प्रसिद्ध यात्रा वृतांतकारों को महत्व देते हुए उन्ही के यात्रा पुस्तक पर शोध कार्य किया गया है।इससे भिन्न समग्र विश्लेषण के आधार पर मैंने हिंदी यात्रा साहित्य के माध्यम से भारतीय महान संस्कृति को दिखाने का प्रयास किया है।
- इस शोध का उद्देश्य सन 1980 से 2000 तक की समय सीमा के भीतर यात्रा वृतांतों में व्यक्त यात्रा स्थलों के वैशिष्ट्य को उजागर करना तथा यात्रा

साहित्य के माध्यम से भारत के अलग-अलग क्षेत्र विशेष के रीति रिवाजों,रहन-सहन,खान-पान,धर्म,नैतिकता,भाषा,परंपरा,वस्त्र,कला आदि विविध पहलू को विश्लेषण और मूल्यांकन करना है और आज के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता तथा सार्थकता को जांच पड़ताल कर निष्कर्ष तक पहुंचना है।

- मैं पूर्ण जिज्ञासा एवं उत्साह के साथ सन 1980 से 2000 तक के हिंदी यात्रा साहित्य का सांस्कृतिक अनुशीलन प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।मेरा उद्देश्य मात्र यात्रा साहित्य का विवरण प्रस्तुत करना नहीं है।अपितु यात्रा साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति,परंपरा तथा नैतिकता को सामने लाने में सजेस्ट हूं।

शोध प्रविधि :

इस शोध कार्य में विश्लेषणात्मक प्रविधि,वर्णनात्मक प्रविधि,आलोचनात्मक प्रविधि, तुलनात्मक प्रविधि को अपनाया जाएगा।

शोध प्रबंध का अध्यायीकरण :

1. प्रथम अध्याय : यात्रा वृत्तांत का स्वरूप और परंपरा

1.1 यात्रा का अर्थ,परिभाषा और स्वरूप

1.2 यात्रा का उद्देश्य

1.3 यात्रा वृत्तांत का अर्थ,परिभाषा, और स्वरूप

1.4 यात्रा वृत्तांत की विशेषताएं

1.5 यात्रा वृत्तांत की प्रमुख तत्व

1.6 यात्रा वृत्तांत रचना का उद्देश्य

1.7 यात्रा वृत्तांत के प्रकार

1.7 यात्रा वृत्तांत और हिंदी साहित्य की अन्य विधाओं का संबंध

1.9 हिंदी यात्रा वृत्तांत का विकास

2. द्वितीय अध्याय : भारतीय संस्कृति का विश्लेषणात्मक परिचय

2.1 संस्कृति का अर्थ,परिभाषा और स्वरूप

2.2 संस्कृति का महत्व

2.3 भारतीय संस्कृति का परिचय

2.4 भारतीय संस्कृति का महत्व

2.5 भारतीय संस्कृति का विकास यात्रा

2.6 साहित्य और संस्कृति में संबंध

3. तृतीय अध्याय : हिंदी यात्रा वृत्तांतो में भारत का पूर्वी क्षेत्र और भारतीय संस्कृति

3.1 रहन सहन

3.2 खान पान

3.3 वेश भूषा

3.4 भाषा

3.5 धर्म

3.6 कला

4. चतुर्थ अध्याय : हिंदी यात्रा वृत्तांतो में भारत का पश्चिमी क्षेत्र और भारतीय संस्कृति

4.1 रहन सहन

4.2 खान पान

4.3 वेश भूषा

4.4 भाषा

4.5 धर्म

4.6 कला

5. पंचम अध्याय : हिंदी यात्रा वृत्तांतो में भारत का उत्तरी क्षेत्र और भारतीय संस्कृति

5.1 रहन सहन

5.2 खान पान

5.3 वेश भूषा

5.4 भाषा

5.5 धर्म

5.6 कला

6. छठा अध्याय : हिंदी यात्रा साहित्य में भारत का दक्षिणी क्षेत्र और भारतीय संस्कृति

6.1 रहन सहन

6.2 खान पान

6.3 वेश भूषा

6.4 भाषा

6.5 धर्म

6.6 कला

7. सप्तम अध्याय : हिंदी यात्रा वृतांतों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का मूल्यांकन

निष्कर्ष

आधार ग्रंथ सूची

संक्षिप्त शोध सार :

जीवन अपने आप में एक यात्रा है। और मनुष्य अनादि काल से निरंतर यात्राएं करता आ रहा है।मानव समाज का विकास भी यात्रा से संबंध रखता है। यात्रा से मनुष्य को बहु आयामी व्यक्तितत्व तथा अनेक अनुभूतियों का गहरा ज्ञान होता है।केवल यात्रा करने से ही कोई यात्री यात्रावृतांतकार नहीं बन जाता।केवल यात्रा के प्रसंग लिखकर मात्र यात्रा विषय प्रस्तुत करना भी यात्रा साहित्य नहीं कहलाता।यात्रियों की आंतरिक प्रेरणा और बाह्य परिवेश का सजग अनुसंधान तथा सुक्ष्म विश्लेषण यात्रा साहित्य में जरूरी होता है।यात्री हर कोई बन सकता है परंतु हर कोई यात्रा साहित्य को सृजन नहीं कर सकता।अतः अपनी यात्रा स्मृति को स्वयं यात्री के द्वारा यथार्थ तथा साहित्यिक ढंग से अभिव्यक्ति ही यात्रा वृतांत कहलाता है।यात्रा वृतांत की रचना लेखक की प्रकृति प्रवृत्ति पर निर्भर करती है। यात्रावृत्तान्तकार की कल्पनाशीलता,सौंदर्य दृष्टि,संवेदना,सूक्ष्म अनुभूति तथा अभिव्यक्ति आदि कुछ तत्व इस विधा को उत्कृष्ट बनाती है। यात्रा वृतांत का मूल भले ही यात्रा हो लेकिन जब कोई यात्रा रचना का रूप लेती है तब एक साथ कई विषयों को स्पर्श कर जाती है। सुभद्रा राठौर के शब्द में _

”कलम की नोक पर क्या-क्या नहीं चलता।यात्रा के साथ-साथ भूगोल,इतिहास, समाजशास्त्र,अर्थशास्त्र,दर्शनशास्त्र,राजनीति,विज्ञान,मनोविज्ञान,पर्यावरण,वाणिज्य आदि को भी अभिव्यक्ति करती है ।इसलिए ज्ञान का अपरिचित भंडार है।यह जिज्ञासाओं के अनेक द्वार खोलकर तृप्ति की ओर ले जाने वाली विद्या है। जहां मनुष्य घर बैठे दुनिया की सैर कर सकता है।”

अतः देश-विदेश के स्थानों, तथ्यों,तथा सामाजिक सांस्कृतिक जीवन को समेट कर यात्रा वृतांत के माध्यम से अभिव्यक्ति करना यात्रा साहित्य का प्रमुख उद्देश्य है।इसलिए यात्रा वृत्तान्तकार को चंचलता,त्याग,सहनशीलता,उदारता आदि प्रवृत्तियों को अपनना पड़ता है।

भारतीय संस्कृति विश्व के इतिहास में कई दृष्टियों से विशेष महत्व रखती है। यह संसार की प्राचीनतम संस्कृति के रूप में जाना जाता है। भारतीय संस्कृति के विशालता,उदारता,प्रेम सहिष्णुता,मर्यादा आदि उसे विश्व की अन्य संस्कृतियों से स्वतंत्र तथा श्रेष्ठ बनाती है।जब हम भारत की संस्कृति की बात करते हैं तो इसका मतलब यह है कि हम कई अलग-अलग संस्कृतियों की बात कर रहे हैं। क्योंकि भारत में कोई अलग अलग संप्रदाय के लोग,अलग अलग भाषा भाषी के लोग, भिन्न भिन्न धर्म के लोगों का निवास स्थली है।इसलिए भी भारत को विविधता में एकता वाला देश कहा जाता है।यहां हर क्षेत्र के अलगसंस्कृति पाई जाती है।अतः भारत एक विशाल और विविध सांस्कृतिक संगम स्थल है।

आज हमारा देश भारतीय संस्कृति और मूल्यों को विश्व स्तर पर प्रचार प्रसार के लिए तत्पर है। हाल ही में अयोध्या में राम मंदिर का प्रतिष्ठा इसका प्रमाण है। अयोध्या में श्री राम के ब्रह्म रूप की प्राण प्रतिष्ठा, श्री राम के रूप में साक्षात भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की प्राण प्रतिष्ठा है। यह साक्षात मानवीय मूल्य और सर्वोच्च आदर्श की प्राण प्रतिष्ठा है। इन आदर्श तथा संस्कृति की आवश्यकता आज पूरा विश्व को है।

यात्रा वृतांत के माध्यम से विभिन्न देशों के कला,दर्शन, शिक्षा, धर्म इत्यादि का वर्णन मिलता है।अतः यात्रा वृतांत के माध्यम से विभिन्न देशों की संस्कृति का ज्ञान तो प्राप्त होता ही है साथ ही हमारी संस्कृति का प्रचार प्रसार भी होता है। जिससे देश का आर्थिक विकास भी होता है।जो संस्कृति समाप्त हो चुकी है या समाप्त होने की कगार पर है उसे यात्रा वृतांत के माध्यम से प्रकाश में लाई जा सकती है। यात्रा वृत्तान्तकार सुप्त संस्कृति को प्रकाश में लाने का कार्य करती है।इस प्रकार किसी भी देश की संस्कृति की संरक्षण में यात्रा वृतांत का महत्वपूर्ण भूमिका है।

मैंने सन 1980 से 2000 तक की समय सीमा के अंदर 15 से 20 हिंदी यात्रा वृतांतों को चयनित किया है। भारतीय संस्कृति को अपने शोध कार्य के माध्यम से विश्लेषण तथा मूल्यांकन करने के लिए महेश शर्मा द्वारा लिखित ’जय कैलाश जय मानसरोवर’(1982),भगवती प्रसाद गुप्त की ’भारत की तीर्थ यात्रा’(1982), विष्णु प्रभाकर की ’ज्योति पुंज हिमालय’(1982), जैनेंद्र कुमार की ’कश्मीर की यात्रा’(1983), अयोध्या प्रसाद द्विवेदी कृत ’संस्कृति स्रोतोंसिनी नर्मदा’ (1987), कृष्णदेव उपाध्याय की ’सांस्कृतिक गाथा’ (1990), गजानन कृत ’भारत के पर्यटन स्थान’ (1991), वेद प्रकाश गुप्ता कृत ’भारत भ्रमण’ (1992), गोविंद मिश्रा कृत ’परतों के बीच’(1997), शिवानंद नौटियाल कृत ’आओ चले केदार बद्री की ओर’(1998), भोला भाई पटेल कृत ’देवों की घाटी’ (1998), स्वामी तपोवन कृत ’हिमालय दर्शन’(2000) आदि यात्रा वृतांतों के माध्यम से हमने भारत के पूर्वी, पश्चिमी,उत्तरी और दक्षिण के विविध क्षेत्र के भिन्न-भिन्न संस्कृति (खान-पान, रहन-सहन,भाषा,कला,धर्म,स्थापत्य,नैतिकता,आदि) को अपने इस शोध कार्य में सार्थक तथा यथार्थ परक अंकन करने का प्रयास किया है।साथ ही आज के संदर्भ में भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता तथा सार्थकता को भी पूर्ण जिज्ञासा और निरपक्ष रूप से विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

सहायक ग्रंथ सूची :

1. हिंदी का यात्रा साहित्य एक विहंगम दृष्टि_ विश्व मोहन तिवारी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली_111032
2. स्वातोंत्तोर यात्रा साहित्य का विश्लेषणत्मक अध्ययन_ डॉ अनिल कुमार, हिंदी बुक सेंटर,नई दिल्ली_110002
3. घुमक्कड़ शास्त्र_ राहुल सांकृत्यायन, डायमंड बुक पब्लिकेशन
4. हिंदी का यात्रा साहित्य_ डॉ रेखा प्रवीण अप्रति,हिंदी बुक सेंटर,आसफ अल्ली रोड,नई दिल्ली_110002
5. हिंदी यात्रा साहित्य_ शशि शेखर तिवारी, लोक भारती प्रकाशन
6. हिंदी यात्रा साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि_ डॉ संध्या शर्मा, बुक पब्लिकेशन, गोमती नगर, लखनऊ _226010
7. हिंदी यात्रा साहित्य में भारत का पूर्वोत्तर_ सुनील कुमार, बोधि प्रकाशन, जयपुर, संस्करण 2017
8. हिंदी का गद्य साहित्य_ रामचंद्र तिवारी,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण 1955
9. संस्कृति,भाषा और राष्ट्र_रामधारी सिंह दिनकर, लोक भारती प्रकाशन, दिल्ली_ 2008
10. संस्कृति के परिपेक्ष में समकालीन हिंदी यात्रा वृत_संगीता पी, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2016
11. साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएं_ कैलाश चंद्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली_ 1946

12. यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास_ सुरेश माथुर,साहित्य प्रकाशन, दिल्ली 1962
13. हिंदी यात्रा साहित्य स्वरूप और विकास_ मुरारी लाल शर्मा,क्लासिक पब्लिकेशन, दिल्ली,संस्करण 2008
14. भारतीय संस्कृति के आधार_ विद्यानिवास मिश्र, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली_ 110002
15. भारतीय संस्कृति की रूपरेखा_ बाबू गुलाब राय, ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली_ 110006

●●●